❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मेधामयासिषम्।

सामवेद 171

मैं धारणावती बुद्धि को प्राप्त करूँ।

May I attain superior intellect.

वर्ष 41, अंक 27 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 23 अप्रैल, 2018 से रविवार 29 अप्रैल, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें– www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा घोषित
अन्धविश्वास निरोधक वर्ष 2018

जादूगर द्वारा अंधविश्वास की पोल खोल कार्यक्रमों की धूम

दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रम को लेकर बच्चों, युवाओं, महिलाओं में विशेष उत्साह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य संस्थाओं द्वारा चमत्कारी बाबाओं, बंगाली बाबाओं के चमत्कारों से जुड़ी भ्रांतियां दूर करने और तंत्र-मंत्र से जुड़ी सच्चाई सामने लाने के लिए अंध विश्वास भगाओ, देश और समाज बचाओ कार्यक्रमों के आयोजन किये जा रहे रहे हैं।

आज देश में बहुत सारे बाबा, तांत्रिक सक्रिय हैं, जो मनचाहा प्यार दिलाने, सौतन से छुटकारा दिलाने के नाम पर, नौकरी और सब दुखों से एक मिनट में छुटकारा दिलाने के नाम पर न सिर्फ लोगों को हजारों का चूना लगा रहे हैं बल्कि महिलाओं तक को भी निशाना बना रहे है। ऐसे लोग छोटे-मोटे जादू टोने लोगों के सामने करते है जिससे लोग उन्हें सिद्ध पुरुष समझकर, अपनी गाढ़ी कमाई का हिस्सा सौंप बैठते हैं। आज हर कोई दुखी है। किसी को बच्चे की कमी, तो किसी को कारोबार में घाटा, कोई इश्क में फंसा है, तो कोई घर में ही अनदेखी का शिकार है इस कारण यह लोग देश की जनता को भ्रमित करके अपने झांसे में फंसा कर पैसा लूटने का कार्य कर रहे हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली के आर्य विद्यालयों एवं आर्य समाजों में जादूगर श्री राजतिलक उर्फ

– शेष पृष्ठ 4 पर

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का आर्य कार्यकर्त्ता सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 में बिहार प्रदेश से पहुंचें 20 हजार से अधिक आर्यजन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य एवं उपमन्त्री विनय आर्य ने दिया महासम्मेलन का आमन्त्रण

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना के तत्त्वावधान में सभा प्रांगण में राज्य स्तरीय आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन शान्ति व सौहार्द पूर्ण वातावरण में 22 अप्रैल 2018 को सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का शुभारम्भ विश्वकल्याणर्थ वैदिक यज्ञ से हुआ। डॉ. व्यास नन्दन शास्त्री, पं. दीप नारायण शास्त्री, पं. विनोद कुमार शास्त्री, पं. दिग्विजय आर्य संयुक्त ब्रह्मा ने यज्ञ सम्पन्न कराया। तत्पश्चात् विहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. संजीव चौरसिया (विधायक) के करकमलों द्वारा ओ३म् ध्वजारोहरण किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि मेघालय के महामहिम राज्यपाल माननीय गंगा प्रसाद जी, विशिष्ट अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य एवं दिल्ली सभा के महामन्त्री एवं सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य थे।

मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी ने उद्घाटन भाषण में कहा 'आज हमें ऋषि दयानन्द के सन्देशों व वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार का सही वातावरण मिला है। समाज में पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरुडम, दहेज प्रथा तथा पाश्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव फैलता जा रहा है। आज गुरुडम फैलाने वालों को जेल की हवा खिलाई जा रही है। ... एक समय था जब महर्षि जी को जहर दिया जाता था उनकी बातों का विरोध

– शेष पृष्ठ 4 पर

कार्यकर्ता सम्मेलन को सम्बोधित करते बिहार सभा के प्रधान श्री संजीव चौरसियाजी, मेघालय के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी एवं दिल्ली सभा के महामन्त्री एवं सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25 से 28 अक्तूबर 2018
दिल्ली
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्वि जन्मशताब्दी समारोह
के शुभारम्भ के रूप में आयोजित होगा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2018 दिल्ली

25-26-27-28 अक्तूबर, 2018

वर्ष 2018 के महासम्मेलन से अगले अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन 2024 दिल्ली
तक विभिन्न देशों में होंगे महासम्मेलन और जनजागृति कार्यक्रम

वेद-स्वाध्याय

कुशल सारथी की महिमा

रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्रयत्र कामयते सुषारथिः।
अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः।। -ऋ. 6/75/6
ऋषिः पायुर्भारद्वाजः।। देवता - सारथिः, रश्मयः।। छन्दः जगती।।

शब्दार्थ-रथे तिष्ठन् = रथ पर पीछे बैठा हुआ **सुषारथिः** = अच्छा सारथि **पुरः** = आगे लगे हुए, आगे- आगे चलने वाले **वाजिनः** = घोड़ों को यत्र-यत्र **कामयते** = जहां-जहां चाहता है वहां **नयति** = ले-जाता है। **अभीशूनाम्** = बागडोरों की, या मन की वृत्तियों की **महिमानम्** = महिमा की **पनायत** = स्तुति करो, क्योंकि **पश्चात्** = पीछे लगी हुई भी ये **मनः** = मन (सारथि) की **रश्मयः** = रश्मियां, रासें, आगे लगे हुए घोड़ों को **अनुयच्छन्ति** = अपने अनुकूल संयत रखती हैं।

विनय- रथ में पीछे बैठा हुआ भी सारथि आगे-आगे चलने वाले घोड़ों को ऐसा काबू रखता है, अपने वश में रखता है कि उन्हें जिधर चाहता है उधर ही ले जाता है। यह कुशल सारथि की महिमा है, पर पीछे बैठा सारथि आगे लगे हुए घोड़ों से जिस साधन द्वारा अपना सम्बन्ध जोड़े रखता है, जिस साधन द्वारा दूर से ही उन्हें काबू में रखता है, असल में तो उस साधन की अर्थात् अभीशुओं (बागडोर) की स्तुति करनी चाहिए। ये रश्मियां(रासें) ही है जो कि घोड़ों को सारथि की इच्छा अनुकूल संयत रखती हैं; घोड़ों को लगाम लगाये रखती हैं। क्या तुमने इन (अभीशुओं) बागडोरों के महत्त्व को समझा? पर ये तो बाहरी अभीशु या रश्मियां हैं। असली रश्मियां तो वे हैं जोकि मन नामक आन्तर ज्योति की वृत्तिरूप किरणें हैं। अन्तरात्मारूपी सूर्य की किरणें ही वास्तविक अभीशु या रश्मियां हैं जिनके द्वारा वह अन्दर का देव बाहर के साथ सम्बन्ध जोड़े हुए है और अपने सब बाह्य जगत् को वश में रख रहा है। वेद ने तो कहा है कि यह मनोदेव ही है जोकि कुशल सारथि की भांति सब मनुष्यों को घोड़ों के समान इधर-उधर लिये फिरता है (यजुः. 34/6)। वास्तव में यह पीछे बैठा हुआ अन्तरात्मा (मनोदेव) अपनी रश्मियों द्वारा ही, अपनी वृत्तियों व सङ्कल्पों द्वारा ही आगे बैठे हुए और स्वतन्त्र दीखनेवाले सब बाह्य जगत् को चला रहा है। हे मनुष्यो! इन मनोवृत्तियों, मन:सङ्कल्पों की महिमा को अनुभव करो। इन रश्मियों को, इन बागडोरों को दृढ़ता से अपने हाथों में पकड़कर कुशल सारथि की भांति अपने-आप को चलाओ, अपने-आप पर शासन करो; अपने शरीर को, अपने हाथ-पैर आदि कर्मेन्द्रियों और अपनी ज्ञानेन्द्रियों को जुड़े हुए अपने घोड़ों की भांति अपनी इच्छानुसार जहां चाहो वहां ले-जाओ और जहां न चाहो वहां न ले-जाओ। वास्तव में इन रश्मियों को हाथ में रखकर तुम जो चाहो वह कर सकते हो। बस, केवल इन मनोवृत्तियों, मन: सङ्कल्पों को दृढ़ता से पकड़ लेने की देर है। फिर तुम अपने-आपको जहां जैसा चलाना चाहोगे वैसे ही तुम्हारी इन्द्रिय आदि सबको चलना होगा। तुम आत्मवशी हो जाओगे, तब तुम देखोगे कि तुम जहां अपने-आपको जैसा चाहते हो वैसा हिलाते हो, वहां अपने सब बाह्य संसार को भी जैसा चाहते हो वैसा हिला रहे हो। यह सब अभीशुओं की, रश्मियों की महिमा है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

कठुआ रेप कांड : सच और झूठ के बीच झूलता देश

पिछले दिनों की दो घटनाएँ देश और दुनिया में प्रमुख चर्चा का विषय बनी। एक घटना में कठुआ में दुष्कर्म की शिकार बच्ची थी तो दूसरी घटना उन्नाव में सत्तारूढ़ पार्टी के एक विधायक द्वारा नाबालिग लड़की के साथ दुष्कर्म का मामला। आखिर दोनों घटनाएँ इतनी चर्चा का विषय क्यों बनी? कहीं ऐसा तो नहीं उन्नाव की घटना राजनीति से जुड़ी थी और कठुआ में हुए दुष्कर्म को धार्मिक रंग दिया गया? क्योंकि कठुआ कांड और उन्नाव जैसे न जाने कितने ही शर्मनाक मामले आए दिन भारत में होते हैं। लेकिन नेता और मीडिया संज्ञान तब लेते हैं जब उसमें कुछ वोट या एजेंडा या फिर हाई प्रोफाइल हो। इस कांड में भी उसकी दिलचस्पी इसी कारण जागी। आरोपी हिन्दू थे, बच्ची मुस्लिम और मंदिर से जुड़ा मामला था इसके बाद बड़ी न्यूज बनी, लाइव शो हुए, ऐसा नहीं था कि बीच में कोई और रेप की खबर नहीं आई! कभी बिहार के सासाराम से, कभी आसाम, कभी गुजरात से लेकिन किसी की दिलचस्पी नहीं थी, न किसी ने सही गलत की जाँच की बल्कि कुछ लोगों ने अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धताओं में बिना सत्य जाने-समझे ही उसे साझा भी किया।

फिलहाल कठुआ में हुए दुष्कर्म के मामले की सुनवाई जम्मू-कश्मीर के बाहर चंडीगढ़ में कराने और वकीलों को सुरक्षा देने के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने नोटिस जारी कर दिया है। आरोपी पक्ष द्वारा इस मामले की सीबीआई जांच की मांग लगातार हो रही है। मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को पत्र लिखकर फास्ट ट्रैक कोर्ट के गठन के साथ मामले की सुनवाई 90 दिन में खत्म करने की मांग की है। पर सवाल यह है कि पुलिस द्वारा चार्जशीट दायर करने के बाद अदालत में ट्रायल शुरू हो गया है तो फिर इस मामले की सीबीआई जांच कैसे हो सकती है?

साथ ही लोगों द्वारा सख्त कानून बनाने की मांग हो रही है। परन्तु कानून क्या करेगा जब पूरी कानूनी प्रक्रिया ही संदेह के दायरे में आ रही है। लोगों में गुस्से के साथ-साथ प्रश्न भी खड़े हो रहे हैं कि एक कमरे के मंदिर में लगातार 7 दिनों तक एक बच्ची के साथ सामूहिक रेप हो सकता है? वे भी उस जगह जहाँ आस-पास के तीन गाँवों के लोग नित्य पूजा-अर्चना को आते हों 17 जनवरी को उस मासूम बच्ची की लाश बरामद होती है। घटना के शुरू में यानि 18 जनवरी को बकरवाल समुदाय के स्थानीय नेता वकार भट्टी की अगुवाई में सभी धर्म पन्थों के लोग न्याय मांगते नजर आते है। इसके बाद भी कुछ समाचार पत्र पोस्टमार्टम की रिपोर्ट को लेकर इस बात का भी दावा कर रहे हैं कि रिपोर्ट में दुष्कर्म हुआ ही नहीं। कुछ भी हो नए सवालों के बीच पुराने जवाब उलझते जा रहे हैं।

मीडिया के अनुसार घटना के तीन महीने बाद हुर्रियत नेता तालिब हुसैन, जेएनयू की पूर्व उपाध्यक्ष शेहला रशीद समेत पूरी वामपंथ की सेना उग्र होती है। रातों-रात बच्ची के नाम पर ऑनलाइन लाखों रुपये का चंदा जमा किया जाता है और लोगों में आक्रोश पैदा होकर रेप और दुष्कर्म जैसे घिनौने अपराधों के प्रति देश की सामूहिक चेतना जागती है। पीड़ित बच्ची की वकील दीपिका राजावत दिल्ली के जन्तर-मंतर पर खड़ी होकर यह कहती है कि मुझे आज हिन्दू होने पर शर्म महसूस हो रही है। इसे भावुकता का बयान समझा जाये या कुछ और?

यदि बात धर्म की ही हो रही है तो मुझे याद है बुलंदशहर में 35 वर्षीय हिन्दू महिला व उसकी नाबालिग बेटी के साथ हुए रेप के मुख्य आरोपी सलीम बावरिया,

...मुझे 16 दिसंबर 2012 को दिल्ली के बसंत विहार में हुआ वह भयावह मंजर भी याद है। निर्भया के साथ जिस शख्स ने सबसे ज्यादा बर्बरता की थी उसे उसके मजहब के हिसाब से बाहर आने पर पुरुस्कृत करने वाले नेता भी याद हैं।

लेकिन मुझे याद नहीं हैं इससे पहले किसी रेप और हत्या के केस में समूचा धर्म, पंथ या समुदाय इस तरह निशाने पर लिए गये हो? शायद ही इससे पहले किसी अभिनेता या अभिनेत्री को हिन्दुस्तानी होने पर शर्म महसूस हुई हो। ....

जुबैर और साजिद के नाम सामने आये थे। मुझे याद है इससे थोड़ा पहले मुंबई में एक हिन्दू महिला पत्रकार के साथ कासिम बंगाली, सलीम अंसारी, चांद शेख, सिराज रहमान ने बारी-बारी से महिला से रेप किया था। हाल ही बिहार के सासाराम में मेराज आलम ने एक नाबालिग हिन्दू बच्ची को अपनी हवस का शिकार बनाया। मुझे 16 दिसंबर 2012 को दिल्ली के बसंत विहार में हुआ वह भयावह मंजर भी याद है। निर्भया के साथ जिस शख्स ने सबसे ज्यादा बर्बरता की थी उसे उसके मजहब के हिसाब से बाहर आने पर पुरुस्कृत करने वाले नेता भी याद हैं।

लेकिन मुझे याद नहीं हैं इससे पहले किसी रेप और हत्या के केस में समूचा धर्म, पंथ या समुदाय इस तरह निशाने पर लिए गये हो? शायद ही इससे पहले किसी अभिनेता या अभिनेत्री को हिन्दुस्तानी होने पर शर्म महसूस हुई हो। 2012 याद ही होगा सबको उस वक्त भी जनता सड़कों पर आई थी। विरोध और प्रदर्शन भी हुए थे बिना किसी नेता या राजनीतिक दल के, बिना किसी के कहे। हर एक संवेदनशील शख्स इस करतूत के विरोध में खड़ा मिला था। वह प्रतिरोध की आवाज थी। लेकिन इस बार सड़कों पर आई जनता का मकसद अलग है। यहां अपराधी की सजा के बजाय मकसद है धर्म और धार्मिक स्थान को बदनाम किया जाये।

सवाल इस या उस दुष्कर्म का नहीं है। सवाल इस या उस धर्म-मजहब का भी नहीं है। सवाल इस या उस समुदाय से जुड़े लोगों भी का नहीं, सवाल है हिंसा और इस तरह के घिनौने दुष्कर्म का है। दुर्भाग्य से यह सब तेजी से बढ़ रहे हैं। आज लोगों को जागरूकता की जगह सस्पेंस चाहिए और मीडिया को नई खबर। यह सब अचानक नहीं है। इसके बीच मीडिया और राजनीति की सनसनी दोनों एक हो गए हैं। पीड़ित लड़की के परिजनों को न्याय मिलना चाहिए बल्कि ऐसे गुनाहों की सजा जल्द से जल्द मिलना सुनिश्चित होनी चाहिए। ऐसे सभी अपराध एक सभ्य समाज के माथे पर बदनुमा दाग है इनकी जितनी निंदा की जाए कम है पर सजा किसी निर्दोष को नहीं होनी चाहिए। -***सम्पादकीय***

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

राजनैतिक षड़यन्त्र का शिकार भगवा रंग

...क्या किसी एक झूठी घटना से प्रत्येक हिन्दू आतंकी हो जायेगा या भगवा रंग को आतंकी कह देने से वह भय का प्रतीक बन जायेगा? क्या इसे देखकर सहज ही महसूस नहीं हो जाता है कि भारत में धर्मनिरपेक्षता की आड़ में सिर्फ बहुसंख्यक वर्ग की आत्मा को छला गया? ऐसा नहीं है कि यह सवाल सिर्फ हम कर रहे हैं बल्कि इन सवालों के जवाब तो खुद पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी अपनी पुस्तक ''कोअलिशन इयर्स'' में मांगते दिखाई दिए। ....

कोशिश तो एक ऐसी अवधारणा बनाने की थी कि यदि कोई साधू या संन्यासी भगवा वस्त्रों में खड़ा दिखे तो अन्य लोग उसके हमलवार होने के संभावना व्यक्त करें और यह समझे कि पास में खड़ा यह आदमी कहीं अचानक उन पर हमला न कर बैठे। लेकिन हैदराबाद की एक निचली अदालत ने इन सब मनसूबों पर पानी फेरते हुए 11 साल पहले हुए मक्का मस्जिद धमाके के आरोपी स्वामी असीमानंद समेत सभी अभियुक्तों को बरी कर दिया है। शुरुआत में इस धमाके को लेकर चरमपंथी संगठन हरकत उल जमात-ए-इस्लामी यानी हूजी पर शक की उंगलियां उठी थीं। लेकिन तीन सालों के बाद यानी 2010 में पुलिस ने ''अभिनव भारत'' नाम के संगठन से जुड़े स्वामी असीमानंद समेत लोकेश शर्मा, देवेंद्र गुप्ता और आर एस एस की साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर को धमाके का अभियुक्त बनाया गया था।

बहरहाल, कोर्ट ने सबूतों के अभाव में इन सभी को बरी तो जरूर कर दिया है, लेकिन वे दाग बरी कब होंगे जो इन हमलों के बाद देश की आत्मा हिन्दू संस्कृति पर लगाये गये थे। इन हमलों के 6 वर्ष बाद यानि साल 2013 देश की संसद का बजट सत्र शुरू होने से ठीक एक दिन पहले कांग्रेस पार्टी के अधिवेशन में देश के तत्कालीन केंद्रीय गृह मंत्री सुशील कुमार शिंदे ने आतंकवाद का रंग और धर्म तलाश करते हुए ''भगवा आतंकवाद'' जैसे शब्द को घड़ा था और इन हमलों को आधार बनाकर कुछ हिन्दू संगठनों का नाम लेते हुए उन्हें भगवा आतंकी तक कह डाला था।

गिरफ्तारी के बाद साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर के साथ अमानवीय व्यवहार किया गया उन्हें एक खंभे से बांधकर पीटा गया। उनके शिष्यों के हाथों उन्हें चमड़े के बेल्ट से पिटवाया गया। उनके भगवा वस्त्रों को उतारकर उन्हें जबरदस्ती दूसरे कपड़े पहनाए गए। अश्लील फिल्में दिखाने के साथ-साथ साध्वी के साथ अमानवीयता की वे सारी हदें तत्कालीन सरकार ने अपने राजनीतिक फायदे के लिए लांघी जिसे एक इन्सान होने के नाते कोई भी स्वीकार नहीं कर सकता।

यदि एक पल को मान भी लिया जाये कि साध्वी दोषी थी तो क्या उनके साथ जांच के दौरान हुई इस निर्ममता की पार हुई हदों को भारतीय संविधान इज़ाजत देता है? यदि नहीं तो एक महिला और साध्वी के साथ यह पाप क्यों किया गया। इन सवालों के जवाब मन को द्रवित करते हैं। जबरन धर्म पर दाग लगाया, संस्कृति को तार-तार किया और भारतीय धराधाम पर अतीत में हुई यह सब बर्बरता और पाप जो मध्यकाल के मुगल शासकों ने यहाँ किये थे। साध्वी के साथ हुई घटना ने क्या पुन: उस दु:ख को ताजा नहीं किया?

क्या किसी एक झूठी घटना से प्रत्येक हिन्दू आतंकी हो जायेगा या भगवा रंग को आतंकी कह देने से वह भय का प्रतीक बन जायेगा? क्या इसे देखकर सहज ही महसूस नहीं हो जाता है कि भारत में धर्मनिरपेक्षता की आड़ में सिर्फ बहुसंख्यक वर्ग की आत्मा को छला गया? ऐसा नहीं है कि यह सवाल सिर्फ हम कर रहे हैं बल्कि इन सवालों के जवाब तो खुद पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी अपनी पुस्तक ''कोअलिशन इयर्स'' में मांगते दिखाई दिए। प्रणब मुखर्जी ने अपनी किताब में लिखा है- मैंने वर्ष 2004 में कांची पीठ के शंकराचार्य जयेंद्र सरस्वती की दीपावली के दिन गिरफ्तारी पर सवाल उठाए थे। एक कैबिनेट बैठक के दौरान मैंने गिरफ्तारी के समय को लेकर काफी नाराजगी जताई थी। मैंने पूछा था कि क्या देश में धर्मनिरपेक्षता का पैमाना केवल हिन्दू संतों महात्माओं तक ही सीमित है? क्या किसी राज्य की पुलिस किसी मुस्लिम मौलवी को ईद के मौके पर गिरफ्तार करने का साहस दिखा सकती है?

वे लिखते हैं कि हिन्दू बाहुल्य देश में, हिन्दू समाज के सबसे बड़े संत को, हिंदुओं के सबसे बड़े त्योहारों में से एक दीपावली के दिन गिरफ्तार करने की बात क्या 2004 से पहले सपने में भी सोची जा सकती थी? परन्तु, यह दुर्भाग्यपूर्ण दिन हिंदुस्तान को देखना पड़ा। 11 नवम्बर, 2004 को हत्या के आरोप में कांची पीठ के शंकराचार्य जयेंद्र सरस्वती को आंध्रप्रदेश की पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। उस समय डॉ. मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री और प्रणब मुखर्जी रक्षा मंत्री थे। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह तो कुछ नहीं बोले, परंतु प्रणब मुखर्जी ने इस प्रकरण में अपनी नाराजगी प्रकट की। (जैसा कि उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा है) परन्तु कांग्रेस सरकार पर उनकी नाराजगी का कोई असर नहीं हुआ। उनके इस प्रश्न का उत्तर भी किसी ने नहीं दिया कि क्या ईद के दिन इसी प्रकार किसी मौलवी को गिरफ्तार करने का साहस दिखाया जा सकता है? कांग्रेस ने इस गिरफ्तारी पर तमिलनाडु सरकार से कोई सवाल नहीं पूछा और न ही किसी प्रकार का विरोध ही किया। उस समय आम समाज ने यह मान लिया था कि हिन्दू धर्मगुरु की गिरफ्तारी के मामले में जयललिता की सरकार को केंद्र की संप्रग सरकार का मौन समर्थन प्राप्त है। परन्तु, हिंदू प्रतिष्ठान को बदनाम करने का यह षड्यंत्र असफल साबित हुआ। न्यायालय ने शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती एवं अन्य पर लगे सभी आरोप खारिज कर दिए। उस तरह आज असीमानन्द और साध्वी प्रज्ञा ठाकुर पर लगे आरोप खारिज हुए हैं।

भगवा रंग एक बार फिर बेदाग दिखाई दिया क्योंकि अध्यात्म, त्याग तपस्या बलिदान वीरता, का ''रंग भगवा'' हमारे मूल चेतन आत्म रंग और ऋषियों मुनियों की थाती रहा है। आध्यात्म परहित बलिदान परंपरा, भगवा रंग से अभिव्यक्त हुआ। वीर सिक्खों के पताके हो या भारतीय धर्म ध्वज पताका इस रंग को हमेशा से भारतीय जन समुदाय आत्मसात करता आया है। किन्तु पिछले कुछ सालों में भगवा आतंक, हिन्दू आतंक जैसे कुछ शब्दों की माला गूथकर देश के राजनेताओं ने अरबो वर्ष पुरानी संस्कृति और एक अरब हिन्दुओं के गले में लटका दी लेकिन अब असीमानंद की रिहाई के बाद एक बार फिर राजनीतिक दलों को विचार करना चाहिए कि धर्मनिरपेक्षता के नाम पर वह जिस प्रकार का व्यवहार बहुसंख्यक वर्ग की भावनाओं, धर्म और संस्कृति के साथ कर रहे हैं क्या वह धर्म और देशहित में है?

- राजीव चौधरी

बोध कथा — मोह ममता के रिश्ते हैं सब, कोई नहीं यहां अपना रे!

गतांक से आगे -

महात्मा को कुछ हुआ नहीं। युवक अपने प्राणों को ब्रह्माण्ड में पहुंचाकर लाश की भांति पड़ा था, सो प्राणों को नीचे उतारकर उठ बैठा।

गुरु ने कहा -''क्यों युवक! देखा तूने, ये सब लोग मुझे कितना प्यार करते हैं? तेरे लिए कितने प्राण देते हैं?''

युवक ने कहा-''हां गुरुदेव! देख लिया सब-कुछ। मेरी आंखें बन्द थीं, परन्तु मेरे कान प्रत्येक बात सुन रहे थे। पहले तरस आया इन लोगों पर कि मैं इन्हें धोखा देता हूं। इनका रोना सुनकर, इनकी चीखें सुनकर जी में आया कि उठ बैठूं और कहूं कि मैं मरा नहीं, परन्तु मन को दृढ़ करे मैं लेटा रहा। जब मां ने कहा, पिता ने कहा, पत्नी ने कहा कि वे सब मेरे लिए जान देना चाहते हैं, स्वयं मरने को तैयार हैं कि मै जी उठूं, तो मैं समझा कि आप जो कहते थे, वह ग़लत था। परन्तु अब समझा हूं गुरुदेव, कि इनमें से कोई भी मुझे प्यार नहीं करता। ये अपने लिए रो रहे थे; अपने लिए चीख़ रहे थे। मेरे लिए कोई भी मरने को तैयार नहीं हुआ। ये सब स्वार्थ के साथी हैं। मेरा साथी केवल वह है, जिसे मैं इनके लिए भुला बैठा था।''

यह है इस मोह की वास्तविकता, जिसके वश में होकर यह संसार उल्टे मार्ग पर बढ़ा जाता है। प्रत्येक स्थान पर स्वार्थ, प्रत्येक स्वार्थ पर भौतिकता, मायावाद, सर्वत्र इस शरीर की चिन्ता अथवा उन लोगों की चिन्ता, जिनका सम्बन्ध इस शरीर से है।

- महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती
साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

धर्मप्रेमी आर्य महानुभावों से निवेदन

सभी धर्मप्रेमी आर्य महानुभावों से निवेदन है कि आर्य समाज के कार्यों और देश-धर्म सम्बन्धित कार्यों में विशेष योगदान और सेवाएं प्रदान करने वाले आर्य नेताओं, आचार्यों, विद्वानों, प्रचारकों, पुरोहितों और आर्य वीर-वीरांगनाओं से सम्बन्धित विशेष घटनाएं जैसे विधवा-विवाह, छुआछूत, स्त्री-शिक्षा, वेद-प्रचार, पाखण्ड-खण्डन, जात-पात बंधन आदि से सम्बन्धित या कोई अन्य प्रेरक प्रसंग आदि की जानकारी जो आज तक प्रकाशित नहीं हुई हो और आपकी जानकारी में है तो आप कृपया **सम्पादक** के नाम **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ई मेल कर दीजिए। हमारा प्रयास रहेगा कि आपके द्वारा प्रेषित सूचना/घटनाक्रम को प्रकाशित कराया/किया जाए।

- सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

राजू अन्धविश्वास व पाखण्ड को जादू के माध्यम से सबके सामने उजागर कर सबकी आंखें खोलने का कार्य कर रहे हैं। जादू कार्यक्रम की इस श्रृंखला के अन्तर्गत दिल्ली के सागपुर, जनकपुरी सी-3 पार्क, हस्तसाल एवं एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल राजा बाजार, चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, ईस्ट ऑफ कैलाश, आर्य अनाथालय पटौदी हाउस, दरियागंज, आर्य समाज मंदिर सुशान्त विहार तथा अन्य कई स्थानों पर अपारभीड़ के सामने जादू जादू के माध्यम से खाली हाथ से बभूती बनाना, नीबू में आग लगाना, साबुत नारियल के अन्दर से उड़द के दान व काला कपड़ा निकालना, साफ हाथों से खून के धब्बे बनाना जैसे जादू के खेल दिखाकर और उनकी सच्चाई को उजागर कर उपस्थित जन समूह को आश्चर्य चकित कर दिया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जादूगर राजतिलक जी को उदयपुर से विशेष रूप से अंधविश्वास और पाखण्ड निरोधक कार्यक्रमों हेतु आमंत्रित किया गया था।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा राजधानी दिल्ली में विभिन्न आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं, स्कूलों, पार्कों आदि में सुबह-शाम जादू के माध्यम से कार्यक्रम आयोजित करके अंधविश्वास के खिलाफ जागरूकता का अभियान चला रही है। ताकि देश से इस तरह की सामाजिक बुराइयों और इनसे उत्पन्न हो रहे अपराधों पर भी अंकुश लग सके। यह कार्यक्रम आप भी अपनी समाज, अपने शिक्षण संस्थानों आदि में कराकर लोगों के अन्दर जागरूकता का प्रवाह कर सकते हैं। **जादू का कार्यक्रम आयोजित करने के लिए आप श्री संदीप आर्य मो. 9650183339 पर सम्पर्क कर सकते हैं।**

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा हम सब का दायित्व

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

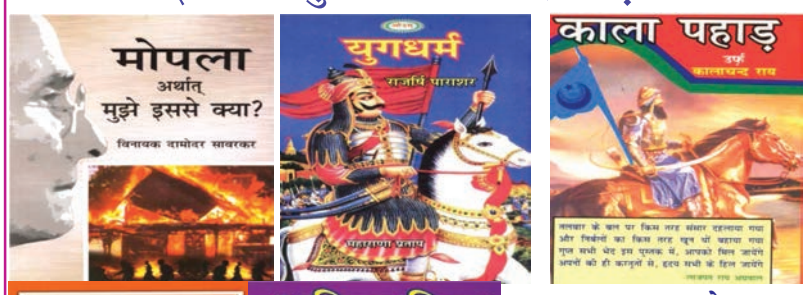

मूल्य : 205/- रुपये
प्रचारार्थ मूल्य :
150/- रुपये मात्र
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें:
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
मो. 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा.....

किया जाता था लेकिन आज आर्यों का सम्मान किया जाता है यह महर्षि जी की सच्ची जीत है।'

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य ने अपने उद्‌बोधन में कहा 'इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अक्टूबर 2018 दिल्ली में होने जा रहा है जिसमें पूरे विश्व के आर्य समाजों के प्रतिनिधि अपनी भागीदारी दर्ज कराने के लिए अभी से तैयारी किये बैठे हैं। आप भी बिहार से भारी संख्या में अपनी भागीदारी दर्ज कराकर संगठन की एकता का सबूत पेश करें।'

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामंत्री श्री विनय आर्य ने कहा कि 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में कम से कम 20 हजार आर्यों को बिहार की ओर से अपना प्रतिनिधित्व करना चाहिए। मुझे विश्वास है कि अभी तक हुए अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में ये सम्मेलन सर्वाधिक सफल होगा। सम्मेलन में भाग लेने वालों के लिए हर प्रकार की सुविधा का विशेष प्रबन्ध किया जाएगा। स्टेशन से सम्मेलन स्थल तक आने-जाने, भोजन आवास इत्यादि की नि:शुल्क व्यवस्था रहेगी।'

समारोह के अन्त में सभा मन्त्री डॉ. व्यास नन्दन शास्त्री जी ने सभी का धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया।

- व्यास नन्दन शास्त्री, मंत्री

पुस्तक परिचय

गुरु विरजानन्द दण्डी जीवन एवं दर्शन

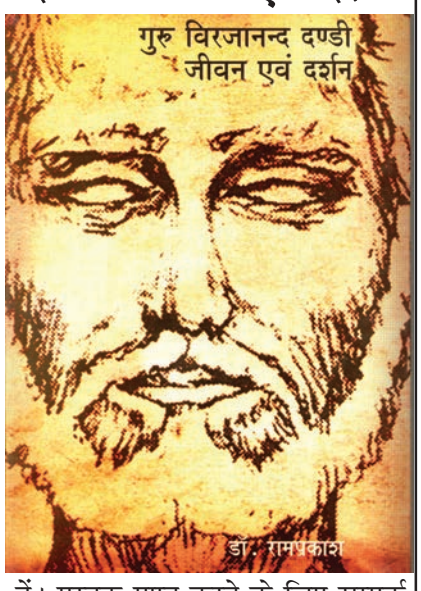

कुछ लोग मानते हैं कि इतिहास में प्राय: नामों और तिथियों के अतिरिक्त कुछ भी सत्य नहीं होता परन्तु मानवता के इतिहास में नाम तथा तिथियां भले ही सन्देहास्पद हों, बाकी प्राय: सत्य होता है। वैसे भी जीवन-चरित केवल कुछ घटनाओं का क्रमवार वर्णन ही नहीं है अपितु चरितनायक के विचारों एवं चेतना की प्रगति की गाथा भी है। अत: परिस्थितियों एवं घटनाओं का दण्डी स्वामी विरजानन्द, तिथियों और सम्वतों का दण्डी स्वामी आज भले ही विद्यमान न हों परन्तु विचार और चेतना का दण्डी स्वामी, चिन्तन और अनुभूतियों का दण्डी स्वामी, व्याकरण का सूर्य दण्डी स्वामी, दयानन्द का गुरु दण्डी स्वामी.... तो सदैव जीवित रहेगा। डॉ. राम प्रकाश (सांसद राज्य सभा) द्वारा रचित **'गुरु विरजानन्द दण्डी जीवन एवं दर्शन'** पुस्तक को अवश्य पढ़ें व इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक को अपने ईष्ट-मित्रों को पढ़ने के लिए दें। पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें:-

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
मो. नं. 9540040339

मातृशक्ति

दूध से बने स्वादिष्ट व्यंजन

आजकल अधिकांश एक उम्र विशेष के बाद दूध का सेवन नहीं करते ऐसे में दूध से बने स्वादिष्ट व्यंजन तैयार कर आप बालकों की सेहत को दुरुस्त कर सकती हैं।

अत्यन्त स्वादिष्ट तथा पौष्टिक श्रीखण्ड : बढ़िया खालिस भैंस के 4 किलो दूध को मिट्‌टी के पात्र में जमा दें। प्रात: उस दही को कपड़े में डालकर खूंटी आदि पर टांग दें। जब सारा पानी निकल जाए, तब उसमें उचित मात्रा में चीनी (शक्कर), इलायची, लौंग, काली मिर्च तथा केसर पीसकर डाल दें और खूब हिलाकर एकजान कर दें। चाहें तो उसमें थोड़ा देशी कपूर भी डाल सकते हैं। यह श्रीखण्ड वीर्यवर्धक, बलकारक, पौष्टिक, अत्यन्त स्वादिष्ट तथा वात-पित्त नाशक है। जठराग्नि को प्रदीप्त करता है। गर्मी को शान्त करता है और बद्धकोष्ठता को हटाता है।

पौष्टिक तथा बलदायक खीर : खालिस दूध 4 किलो, बढ़िया चावल एक पाव, चीनी (शक्कर) तीन पाव, इलाइची के दाने 6 ग्राम, अर्क केवड़ा 6 ग्राम, चांदी के वर्क 6 पीस, किशमिश आधी 50 ग्राम, महीन कटी हुई गोला गिरी 50 ग्राम, कतरा हुआ पिस्ता 50 ग्राम, बादाम गिरी तथा कतरी हुई मीगी 50 ग्राम।

कड़ाही या भगौने में दूध डालकर औटा लें, फिर उसमें चावलों को डाल दें और कड़छी से हिलाती रहें। जब चावल गल जाए, उसमें सारी मेवा डाल दें। खूब घुट जाने पर चूल्हे से नीचे उतार लें। फिर चीनी मिलाकर अर्क केवड़ा डाल दें, फिर स्टील या कलई की प्लेटों अथवा प्लेटों में डालकर ऊपर से चांदी का वर्क लगा दें। कुछ ठण्डी होने पर बच्चों को खिलाएं। यह खीर बलप्रद, पौष्टिक तथा वीर्यवर्धक है। इसमें चाहें तो केशर भी डाल सकती हैं।

- आचार्य भद्रसेन
साभार: आदर्श गृहस्थ जीवन

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

जन्मदिवस पर विशेष

आर्य भाषा (हिन्दी) के प्रबल समर्थक महात्मा हंसराज जी

– प्रो. सुरन्दरलाल कथूरिया

आर्य जगत के अग्रणी नेता वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, आर्ष सिद्धान्तों के अनुयायी, वैदिक सिद्धांतों एवं आर्य समाज की मान्यताओं के प्रचारक-प्रसारक, सादा-जीवन उच्च विचार का मूर्ति मंत रूप दृढ़व्रत, त्याग-तपस्या का जीवन जीने वाले, आदर्श शिक्षक, प्रखर चिंतक, यशस्वी संपादक, ईश्वर विश्वासी, प्रभुविष्णु व्याख्याता, उच्चकोटि के शिक्षाविद्, सद्विचारक, सुयोग्य लेखक तथा वेद-मंत्रों के तत्त्वार्थ बोधक महात्मा हंसराज जी ने अपने जीवन का उत्तमांश डी.ए.वी. से सम्बद्ध संस्थाओं को सर्वात्मना समर्पित कर दिया। अभावग्रस्त जीवन जीने वाले महात्मा हंसराज जी का बचपन कल्पनातीत संघर्षों में व्यतीत हुआ, किन्तु अपने शिव संकल्प एवं मेधा के बल पर उन्होंने सफलता के उत्तुंग शिखरों पर पद-निक्षेप किया। अपने प्रेरक उद्बोधनों से महात्मा हंसराज जी ने असंख्य विद्यार्थियों के जीवन का उद्धार किया। ईश्वर-भक्ति, स्वाध्याय, सत्संग, स्वावलंबन, परोपकार, ब्रह्मचर्य, देशभक्ति, निर्भीकता, प्राणायाम, संध्या, गायत्री मंत्र के जाप, संगठन-शक्ति, वेदाध्ययन, तप-त्याग, शिक्षा के आदर्श महर्षि दयानन्द के प्रेरक जीवन एवं बहुत से वेद-मंत्रों के भावार्थ से युवकों को प्रेरित करने वाले महात्मा हंसराज जी ने उन्हें प्राण-पण से आर्य भाषा (हिन्दी) के प्रचार-प्रसार का संकल्प लेने की प्रेरणा दी है।

महात्मा हंसराज जी उत्कृट राष्ट्रप्रेमी थे। किसी भी राष्ट्र भक्त के लिए यह आवश्यक है कि वह देश की धरती देश के लोगों, देश की संस्कृति और राष्ट्रभाषा से तहेदिल से प्रेम करें और उसमें जातीय स्वाभिमान हो। ये सारे गुण महात्मा हंसराज जी में थे। उनका जीवन वेदानुकूल था और वे 'माता भूमि पुत्रोऽहम् पृथ्विया:' के वेदादेश के अनुयायी थे। वे भारत भूमि को अपनी माता और स्वयं को उसका पुत्र मानते थे। उनका दृष्टिकोण उदार था और वे 'वसुधैव कुटुंबकम्' के सिद्धांत के अनुयायी थे। इसके बावजूद अपने देशवासियों के प्रति उनके मन में असीम प्रेम था। प्राकृतिक आपदाओं के समय अपनी जान पर खेलकर उन्होंने देशवासियों की सेवा की। वे नि:स्वार्थ समाजसेवी थे। जन-जन को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाना उनके जीवन का लक्ष्य था। अपने शिक्षण, उपदेशों, प्रवचनों, व्याख्यानों, लेखों आदि के द्वारा उन्होंने 'मनुर्भव' का दिव्य सन्देश दिया है। वैदिक संस्कृति, जो विश्ववारा है और भारतीय संस्कृति का मूलाधार है, के वे अनुपालक थे। वे सच्चे अर्थों में आर्य थे और उनमें आर्यत्व का जातीय स्वाभिमान था। इस जातीय स्वाभिमान को वे सभी आर्यों में जगाना चाहते थे और आर्यों को सुसंगठित होकर चलने की श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा देते थे। युवकों में इन भावों को जागृत करना उनकी दृष्टि में और भी आवश्यक था। 'युवकों के नाम' शीर्षक लेख में उन्होंने इन बातों को अन्य देशों के उदाहरण देकर भलीभांति स्पष्ट किया है। जाति के भाव को धर्म से और भाषा से जोड़ते हुए महात्मा हंसराज जी ने लिखा है, " आप कोई जाति नहीं देख सकते, जहां भाषा एक न हो। यह एक ऐसा ही आवश्यक प्रश्न है जैसा कि वंश (Race) का। लोग बिना इस एकता के एक लड़ी में पिरोए नहीं जा सकते।"[1] राष्ट्रीयता की भावना को सुदृढ़ करने के लिए किसी राष्ट्र में किसी एक राष्ट्रभावना का होना परमावश्यक है, क्योंकि इसके बिना किसी राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति नहीं हो सकती। किसी एक भाषा के साथ किसी एक लिपि का होना भी आवश्यक है, अत: महात्मा जी ने भाषा के साथ लिपि के प्रश्न को भी उठाया है और लिखा है कि "आर्य जाति व भारतवर्ष की उन्नति के लिए एक लिपि का होना आवश्यक है। फिर वह भाषा क्या हो तथा वह लिपि क्या हो।[2] महात्मा हंसराज जी ने जब राष्ट्रभाषा और उसकी देवनागरी लिपि का प्रश्न उठाया तब देश पराधीन था और पूरे देश में अंग्रेजी का वर्चस्व था। ब्रिटिश शासन के उस दौर में जातीय स्वाभिमान, स्वराज (राष्ट्रीयता), आर्ष शिक्षण-पद्धति, आर्यभाषा (हिन्दी) आदि की वकालत करना खतरे से खाली नहीं था, किन्तु इसकी परवाह न करते हुए आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायियों ने, विशेषकर स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज आदि ने निर्भीकता पूर्वक इन विषयों का प्रबल समर्थन किया।

वैदिक सिद्धांतों के साथ आर्यभाषा (हिन्दी) के भी महात्मा हंसराज सबल पक्षधर थे। उन्होंने युक्ति तर्क-प्रमाण-पुरस्सर शैली में आर्यभाषा (हिन्दी) को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने की वकालत की है। उनका तर्क है कि जो भाषा देश में सर्वाधिक बोली जाती हो, वहीं राष्ट्रभाषा बनने की अधिकारिणी है। बंगला, गुजराती, मराठी, पंजाबी, तेलगू, कन्नड़ तमिल आदि भाषाएं अपने-अपने क्षेत्रों में बोली जाती हैं और इनकी बोलने वालों की संख्या अपेक्षाकृत सीमित है। तत्कालीन जनगणना के आंकड़ों के आधार पर, जो महात्मा हंसराज जीने दिए हैं, बंगला बोलने वालों की संख्या छ: करोड़, गुजराती और मराठी बोलने वालों की संख्या एक-एक करोड़, पंजाबी भाषियों की संख्या लगभग डेढ़ करोड़ है, किन्तु हिन्दी भाषाभाषी दस-बारह करोड़ है।[3] जहां तक संस्कृत का प्रश्न है, वर्तमान समय में उसे बोलने वालों की संख्या बहुत कम है। महात्मा जी के शब्दों में, "संस्कृत विद्वानों की भाषा हो सकती है परन्तु ऐसा विचार है कि संस्कृत हमारे देश की जनभाषा बन जाए औ हमारे बाल-बच्चे संस्कृत ही बोलने लग जाएं, यह एक कल्पनामात्र है।"[4] अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या मुश्किल से पांच प्रतिशत होगी। यों भी, कोई विदेशी भाषा इस देश की राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती।

हिन्दी की व्याप्ति पूरे देश में है। हिन्दी भाषाभाषी प्रदेशों में ही नहीं, अहिंदीभाषी प्रदेशों में भी यह बोली और समझी जाती है। एक प्रकार से यह पूरे देश की भाषा है, अत: राष्ट्रभाषा के लिए इसका दावा सबसे मज़बूत है। कुछ लोगों का सोचना है कि कोई भाषा राष्ट्रभाषा है ही नहीं, किन्तु उनकी यह सोच भ्रामक और मिथ्या है, क्योंकि सुनिश्चित रूप से हिन्दी इस देश की राष्ट्रभाषा है। हिन्दी के पक्ष में उसकी सहजता सरलता का तर्क भी महात्मा हंसराज ने दिया है। 'आप हिन्दी को पंद्रह दिन में सीख सकते हैं, परन्तु उर्दू-अंग्रेजी को सीखने के लिए कई वर्षों का समय चाहिए।'[5] हिन्दी को सीखने और उसमें कार्य करने के लिए केवल दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है, जिसके अभाव में स्वाधीनता-प्राप्ति के इतने वर्षों के बाद भी हिन्दी में राजकाज नहीं हो रहा है; जबकि महात्मा हंसराज जी के अनुसार, 'महाराजा ग्वालियर ने आज्ञा दी थी कि दो वर्ष में हिन्दी सीख लो, अत: अब हिन्दी में भली प्रकार से कार्य होता है।'[6] यदि देश के शासकों में अपनी राष्ट्रभाषा में कार्य कराने की दृढ़ इच्छा शक्ति हो और वे शासकीय आदेश दें तो नि:संदेह सारे देश का राजकाज स्वल्प समय में ही हिन्दी में हो सकता है।

हिन्दी की लिपि देवनागरी है। भारतीय संविधान में जिस हिन्दी को राजभाषा की मान्यता दी गई है, उसकी लिपि देवनागरी है। महात्मा हंसराज हिन्दी भाषा के साथ देवनागरी लिपि के भी प्रबल समर्थक हैं। वे चाहते थे कि पूरे देश में एक लिपि हो और वह लिपि देवनागरी हो। उनकी यह भी इच्छा थी कि गुरु 'ग्रंथ साहिब', मराठी, बांगला, गुजराती आदि के साहित्य को देवनागरी में प्रकाशित कराया जाए, क्योंकि इन सब भाषाओं का मूल संस्कृत है। ऐसा हो जाने पर देश के अधिकतर लोग इन साहित्यों की श्रेष्ठ कृतियों का रसास्वादन कर सकेंगे। कालान्तर में सुप्रसिद्ध गांधीवादी एवं भूदान के प्रणेता आचार्य विनोबा भावे ने भी जोड़ लिपि के रूप में नागरी का समर्थन किया है। महात्मा हंसराज का यह सपना अब बहुत कुछ साकार हो चुका है। 'ग्रंथ साहिब' संभवत: नागरी लिपि में प्रकाशित हो चुका है तथा अन्य भारतीय भाषाओं की उत्तमोत्तम कृतियां भी हिन्दी में अनूदित होकर नागरी में प्रकाशित हो चुकी हैं। सांकेतिक रूप से महात्मा जी ने अंग्रेजी, उर्दू की लिपियों/भाषाओं के दोषों को उजागर कर हिन्दी की निर्दोषता और नागरी लिपि की वैज्ञानिकता को सिद्ध किया है।

युवकों को प्रेरित करते हुए महात्मा हंसराज जी ने कहा है कि वे हिन्दी के प्रचार को अपने जीवन का मिशन बनाएं। कारण यह कि 'आर्य समाज का आरम्भ से ही यह विचार रहा हे कि हिन्दी का प्रचार किया जाए। जब दयानन्द एंग्लोवैदिक कॉलेज की स्थापना की गई थी तो चार सिद्धांतों में से एक हिन्दी प्रचार का था।[7] कहने की आवश्यकता नहीं कि महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और डी.ए.वी. के प्रति सर्वात्मना समर्पित होने के कारण महात्मा हंसराज हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के प्रबल समर्थक थे।

सन्दर्भ : 1. प्रेरक प्रवचन, महात्मा हंसराज, 'युवकों के नाम' शीर्षक लेख पृ. 2; 2. वही, पृ.3, 3. विस्तार के लिए देखिए-वहीं, पृ.3; 4वही पृ.3; 5. वही, पृ. 5; 6. वही, पृ.5; 7. वही, पृ.6

आर्यजनों के लिए खुशखबरी
महर्षि दयानन्दकृत
सम्पूर्ण साहित्य
सत्यार्थ प्रकाश
(18 भाषा में)
अब सीडी में भी उपलब्ध
मूल्य मात्र 30/- रुपये

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफास
आओ! जानें मनुस्मृति का सच।
स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

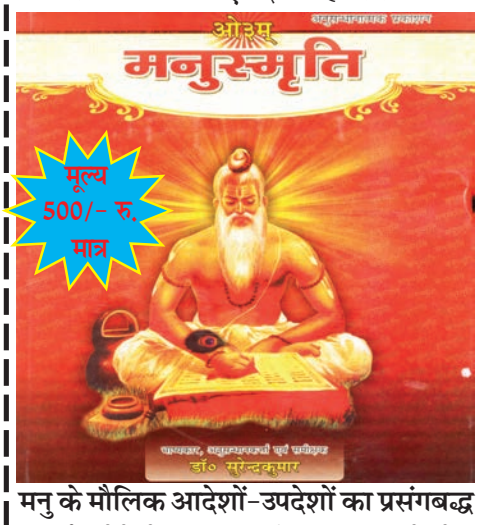

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।
मूल्य : ~~600/-~~ 500/-
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

Veda Prarthana - II
Regveda - 6

May All of You be united in Virtuous Thoughts Words and Actions

- Acharya Gyaneshwarya

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते।।

ऋग्वेद 10/191

Sam gachchhadhvam sam vadadhvam sam vo manamsi janatam.
Deva bhagam yatha poorve samjanana uapasate.

- Rig Veda 10:191:2

God through this Veda mantra directs human beings that all of us should have similar virtuous ideals, thoughts, spoken and writtn words, and a clions so that we can in union uplift the society. When people are united to promote and attain virtuous goals for the society, there is mutual respeet, love and affection for each other, which in turn further promotes mutual trust and faith in each other. These all in turn promote peace, fulfillment, happiness, courage and bravery in the society, otherwise it is hard to accomplish these ideals.

Unfortunately, in the present world, we human beings who all are children of the same One God have moved far away from each other in our core values and beliefs. The earth has been divided into hundreds of sectarian nations with different cultures, religions, languages, laws, methods of education, styles of worship, belief in different God or gods. Even though we all human beings have similar physical boies, yet because of these artificial divisions on earth we have become strangers and sometimes even enemies to other humans.

Although, for people having similar vituous values, thoughts anb eing likeminded is most important for unity, nevertheless, having same language makes unity a lot easier. For example within India (similarly within many other nations also) a strange situation has arisen among its citizens because of the different languages spoken in the various Indian states. A North Indian cannot easily communicate with a South Indian or an Indian from an Eastern state e.g. Bengal or Asaam with one from Western state e.g. Maharashtra or Gujarat whereby becoming stranger to each other. Therefore, when people meet each other, due to lack of command of each other's language, they cannot express their true feelings or communicate their message completely. Unfortunately, this separation and disunity from each other is called a virtue and an asset rather than a liability and is being promoted as union in diversity and separation. However, this principle of unity in separation is impossible to succeed in reality.

Whenever, there is separation of people in various groups, due to selfish interests and the seeking of more importance by one group over the other or their agenda, there will always be opposition by other groups whose interests are short-changed in the process. The opposition further leads to jealousy towards other groups and blind attachment to members of one's own group. These in turn leads to doubt, worry, and fear in the society about members of the other groups and overall make life unhappy and leads to lack of peace in the society as a whole. Under these circumstances of disunity, due to the prevailing mutual jealousy and mistrust among various groups, the nation, society and individuals suffer to a considerable extent. Opportunists exploit such disunity among people in a nation, and take advantage of the situation to become corrupt or ruthless leaders. Similarly there are many examples in history, when some nations observing disunity among people in other nations, have conquered them to rule and subjugate the disunited people.

Therefore, this Veda mantra states, O human beings! Unite, because fulfillment of societal goals and completion of societal works are for the welfare of all and the nation needs input from everybody. An individual peson (while he/she may be able to lead others) cannot accomplish these goals on his/her own. Even, evil persons join in groups e.g. goonda gangs in India, mafia, drug cartels etc. to terrorize good people who are disunited and make their life miserable and deprive them of peace. There is always strength in union. Although, all over the world there are greater number of good people rather than bad or evil persons, yet good persons are usually not united for a common cause of honesty and welfare for all. On the other hand, a limited number of dishonest, corrupt, or bad people exploit, cheat, rule, and control the majority through deception, stealing, robbing, fear, terrorism e.g. corrupt politicians dictators all over the world.

The Vedas state that by having similar virtuous ideals, thoughts, spoken and written words, and actions we can in union uplift the society. These are the principles by which a society can accomplish many great goals. Otherwise, it will not succeed. History informs us that in the past those nations that were united for a common goal succeeded and those nations that were disunited got defeated and conquered.

Dear God, this is our heartfelt prayer to You that fill up our mind and intellect (our antahkaran) with mutual love, faith, trust, respect for others so that united together we may remove all the bad practices in our families, society and the nation and together achieve prosperity and happiness. May all the human beings on the earth pray to You alone, have one common language similar prayer, similar foods and clothing and work together for welfare of all. May there be no selfishness, jealousy, or disunity.

'(For being united with others for virtuous causes, also see =mantra #31)

To Be Continue....

आओ ! संस्कृत सीखें

समय (50)

गतांक से आगे....

समय

1:00 एकवादनम्
1:05 पञ्चाधिक एकवादनम्
1:10 दशाधिक एकवादनम्
1:15 सपाद एकवादनम्
1:20 विंशत्यधिक एकवादनम्
1:25 पञ्चविंशत्यधिक एकवादनम्
1:30 सार्ध एकवादनम्
1:35 पञ्चत्रिंशतधिक एकवादनम्
1:40 चत्वारिंशतधिक एकवादनम्
1:45 पादोन द्विवादनम्
1:50 दशोन द्विवादनम्
1:55 पञ्चोन द्विवादनम्
2:00 द्विवादनम्

कः समयः ?

1:05 (1:05) पञ्चाधिक एकवादनम्
1:10 (1:10) दशाधिक एकवादनम्
1:15 (1:15) सपाद एकवादनम्
1: 20 (1:20) विंशत्यधिक एकवादनम्
1:25(1:25)पञ्चविंशत्यधिक एकवादनम्
1:30 (1: 30) सार्ध एकवादनम्

प्रश्नः 2:30 (2: 30) - ?
3: 05 (3: 05) - ?
4:10(4:10) - ?
5:20 (5: 20) - ?
6:15 (6:15) - ?
7: 25 (7: 25) - ?

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

शोक समचार

श्री राम चन्द्र कपूर जी को पत्नीशोक

आर्यसमाज कालकाजी के पूर्व मन्त्री एवं प्रधान श्री रामचन्द्र कपूर जी की धर्मपत्नी श्रीमती बिमला कुमारी कपूर जी का 78 वर्ष की आयु में दिनांक 20 अप्रैल, 2018 को निधना हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 23 अप्रैल, 2018 को आर्यसमाज कालका जी में सम्पन्न हुई जिसमें निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मां को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

मेरा बेटा कहाँ से आता ?

श्रद्धानन्द काल की घटना है। मुस्लिम लीगी मुसलमानों ने दिल्ली में जाटों के मुहल्ले से गाय का जलूस निकालना चाहा। वीर लोटनसिंह आदि इसके विरोध में डट गये। लीगी गुण्डों ने मुहल्ले में घुस-घुसकर लूटमार मचा दी। वे एक मन्दिर में भी घुस गये और जितनी भी मूर्त्तियाँ वहाँ रक्खी थीं, सब तोड़ डालीं। भगीरथ पुजारी एक कोने में एक चटाई में छुप गया। किसी की दृष्टि उसपर न पड़ी। वह बच गया।

पण्डित श्री रामचन्द्रजी ने उससे पूछा कि तू दंगे के समय कहाँ था? उसने कहा, ''मन्दिर में ही था।''

पण्डितजी ने पूछा, ''फिर तू बच कैसे गया?'' उसने बताया कि मैं चटाई में छुप गया था।''

पण्डितजी ने पूछा, ''तुम्हें उस समय सर्वाधिक किसकी चिन्ता थी?''

पुजारी ने कहा, ''अपने बेटे की थी। पता नहीं वह कहाँ है?''

पण्डितजी ने पूछा ''तुम्हें देवताओं के टूटने-फूटने की कोई चिन्ता नहीं थी?''

उसने स्पष्ट कहा, ''अजी वे तो फिर जयपुर से आ जाएँगे कोई दो रुपये का, कोई चार रुपये का, कोई आठ का, परन्तु मेरा बेटा कहाँ से आता?''

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा के संयुक्त के तत्त्वावधान में

नि:शुल्क योग साधना एवं सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा, देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 28 मई से 3 जून 2018 तक गुरुकुल पौंधा में योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष **सत्यार्थ प्रकाश** का स्वाध्याय कराया जाएगा। अपनी पुस्तक साथ लेकर जाएं अन्यथा वहां से खरीदनी पड़ेगी। शिविर पूर्णत: नि:शुल्क है। केवल आने-जाने का मार्ग व्यय खर्च होगा। दिल्ली से पौंधा बस द्वारा आना-जाना लगभग 800 रुपये है। लोकल ट्रेन से जाने वाले शिविरार्थी अपना रिजर्वेशन स्वयं करवा लें तथा सूचना दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में अवश्य दे देवें। शिविर में रहने व भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क होगी। दिल्ली से रविवार दिनांक 27 मई 2018 को रात्रि में रवाना होंगे व रविवार 3 जून 2018 को पौंधा से वापसी होगी। शिविर में जाने के लिए सम्पर्क करें-

श्री सुखवीर सिंह आर्य, शिविर संयोजक,
मो. 09350502175, 09540012175, 07289850272

वैदिक विदुषी की आवश्यकता

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किए जाने वाले माता अमृतबाई कन्या संस्कृतकुलम् के संचालन एवं व्यवस्था के लिए आर्ष पाठ विधि से शिक्षा प्राप्त विदुषी महिला की आवश्यकता है। आकर्षक वेतन एवं सुविधाएं। संस्कृत कुलम में समस्त व्यवहार संस्कृत भाषा में ही किए जाते हैं। अत: संस्कृत भाषा/व्याकरण का पूर्ण पारंगत अभ्यर्थी जो दिल्ली में रहकर निरन्तर अपनी सेवाएं प्रदान कर सके, अपना आवेदन पत्र सभी सम्बन्धित प्रमाणपत्रों की प्रति के साथ 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 पर भेज देवें या aryasabha@yahoo.com पर ई-मेल करें। - ***महामन्त्री***

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

आर्यसन्देश के समस्त पाठकों की सूचनार्थ है कि 'आर्य सन्देश' में एक नया स्तम्भ **'मैं आर्य समाजी कैसे बना'** पुन: आरम्भ कर दिया गया है। इस स्तम्भ में उन सभी महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जाएगा जो किसी की प्रेरणा/ विचारधारा से आर्य समाजी बनें हों। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखें या aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें। हमारा पता है-

सम्पादक,
आर्य सन्देश साप्ताहिक,
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2007 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1000/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2027 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - ***सम्पादक***

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

- ***सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

चुनाव समाचार

आर्य समाज मयूर विहार,
फेस-2, दिल्ली-110091
प्रधान - श्री हरवंश लाल शर्मा
मंत्री - श्री ओम प्रकाश पाण्डेय
कोषाध्यक्ष - श्री लक्ष्मी चन्द गुप्ता

आर्यसमाज पटेल नगर, नई दिल्ली
प्रधान - श्री जितेन्द्र आर्य
मंत्री - श्री आदित्य पाहुजा
कोषाध्यक्ष - श्री बलराज तनेजा

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 4 से 17 जून 2018, स्थान गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद
प्रवेश शुल्क 500/-रुपये (पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।) विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें- **ऋषिपाल आचार्य, संयोजक, मो. 09811687124**

सार्वदेशिक आर्यवीरांगना दल के तत्वावधान में

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आरत्मरक्षण शिविर

7 मई से 3 जून,18 : आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, मुट्ठीगंज इलाहाबाद (उ.प्र.)

नियम : शिविरार्थी की आयु कम से कम 14 वर्ष हो। ⋆शिविरार्थी को शिविर स्थल पर 27 मई दोपहर 1 बजे तक अवश्य पहुंचना होगा। ⋆ सभी शिविरार्थी अपना नामांकन 27 मई दोपहर 1 बजे तक अवश्य करा लें। **शिविर शुल्क 300/-।** विस्तृत जानकारी के लिए श्री पंकज जायसवाल शिविराध्यक्ष मो. 9415365576 सम्पर्क करें - **-साध्वी डॉ. उत्तमायति, प्रधान संचालिका**

आर्यवीर दल मध्य प्रदेश एवं विदर्भ का प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्यवीर दल मध्य प्रदेश एवं विदर्भ के तत्त्वावधान में प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर का 5 से 13 मई के बीच श्री रामलीला प्रांगण, विदिशा में आयोजन किया जा रहा है। शिविर शुल्क 250/- प्रातराश , भोजन व आवास नि:शुल्क होगा। शिविरार्थी की आयु 14 से 25 वर्ष एवं शिक्षा 8वीं पास होना चाहिए। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें- श्री जगन्नाथ सिंह आर्य, प्रान्तीय सहायक संचालक मो. 09340983962 **-दिनेश बाजपेयी, प्रान्तीय संचालक, 09425162850**

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

37वां वैचारिक क्रान्ति शिविर: 17 से 27 मई, 2018

आर्यजन अभी से तिथियां नोट कर लेवें और अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें। जानकारी के लिए सम्पर्क करें - ***जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री (9810040982)***

आर्यसमाज मयूर विहार-2 वाली सड़क का नामकरण आर्य समाज मार्ग का उद्घाटन

आर्य समाज मयूर विहार फेस-2 के पदाधिकारियों के वर्षों के अथक प्रयासों के बाद जिस मार्ग पर समाज स्थिर है उसके सामने वाले लगभग 2 किलोमीटर लम्बे मार्ग का नाम 'आर्य समाज मार्ग' कर दिया गया जिसका विधिवत् उद्घाटन पूर्वी दिल्ली नगर निगम की मेयर श्रीमती निमा भगत एवं भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष (राष्ट्रीय) श्री श्याम जाजू जी के कर कमलों द्वारा 12 अप्रैल 2018 को सम्पन्न हुआ। -***ओम प्रकाश पाण्डेय, मंत्री***

आर्य समाज नेमदारगंज में

वैदिक चिन्तन धारा का आयोजन

आर्य समाज नेमदारगंज (नवादा बिहार) में नवशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में ऋषिबोध दिवस से निरंतर प्रतिदिन चलने वाले वैदिक चिन्तन धारा (रात्रि 8 से 10 बजे तक) का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजक श्री हर्षवर्द्धन आर्य की प्रथम सन्तान एवं श्री सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरूत' जी की प्रथम सुपौत्री 'प्रियल वेदध्वनि' का अन्नप्राशन संस्कार साप्ताहिक सत्संग उपरांत श्री संतशरण आर्य के ब्रह्मत्व में गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

- ***हर्षवर्द्धन आर्य***

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबूपर्वत का

28वां वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबू पर्वत जिला सिरोही (राज.) अपना 28वां वार्षिकोत्सव 26 से 28 मई के बीच आयोजित कर रहा है। त्रिदिवसीय समारोह में यज्ञ, भजन, वेदोपदेश तथा ब्रह्मचारियों द्वारा शास्त्रार्थ, व्याख्यान, व्यायामादि के प्रदर्शन के कार्यक्रम आयोजित होंगे। कृपया अपने आने की सूचना 09414589510 पर दें। **- स्वामी धर्मानन्द**

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र
सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth
मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान :
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।
'मोपला'
प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 23 अप्रैल, 2018 से रविवार 29 अप्रैल, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 26/27 अप्रैल, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 25 अप्रैल, 2018

इस वर्ष भारत की राजधानी नई दिल्ली में होगा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018 दिल्ली

25-26-27-28 अक्तूबर, 2018

समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों - विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट करें तथा इन तिथियों में आपना कोई भी आयोजन न रखें और दल-बल सहित अधिकाधिक संख्या में महासम्मेलन में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा इस सूचना को विभिन्न माध्यम से प्रचारित करें।

निवेदक

सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मपाल आर्य, प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली सभा का व्हाट्एप्प : आओ जुड़ें - साझा करें विचार

तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

67 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

महर्षि दयानन्दकृत

सत्यार्थ प्रकाश

उर्दू भाषा में अनुवाद)

मूल्य मात्र

100/- रुपये

श्री बलदेव राज महाजन जी

(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)

के विशेष सहयोग से

केवल मात्र 70/- में

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. 9540040339

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001,

मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह